# बकरी और लोमड़ी

एक समय की बात है, एक लोमड़ी जंगल में घूमते-घूमते एक कुएँ के पास पहुँची। कुएँ के चारों ओर दीवार नहीं थी। लोमड़ी ने ध्यान नहीं दिया और भीतर गिर गई। हालाँकि कुआँ बहुत गहरा नहीं था पर लोमड़ी बाहर नहीं निकल पा रही थी। निराश होकर वह वहीं बैठ गई। तभी ऊपर से एक बकरी जाती दिखाई दी। बकरी ने लोमड़ी को कुएँ में देखकर पूछा, "अरी बहन, तुम भीतर क्या कर रही हो?" लोमड़ी ने कहा, "बकरी बहन! तुम्हें पता नहीं है... शीघ्र ही भयंकर सूखा पड़ने वाला है। यहाँ कोई और आए उससे पहले ही मैं भीतर आ गई। कम से कम यहाँ पानी तो है। तुम भी क्यों नहीं भीतर आ जाती हो?" बकरी ने सोचा कि लोमड़ी बहुत अच्छी सलाह दे रही है और वह भी कुएँ में कूद गई। बकरी के कुएँ के भीतर पहुँचते ही लोमड़ी उछलकर बकरी की पीठ पर चढ़ी और फिर बाहर निकल आई। उसने बकरी से कहा, "अलविदा बहन, मैं तो चली" और लोमड़ी सिर पर पैर रखकर भाग गई।

***शिक्षा:*** *आँख मूंदकर किसी पर विश्वास मत करो।*

# लोमड़ी और अंगूर

एक दिन गर्मी की दोपहर में एक लोमड़ी भोजन की खोज में जंगल में घूम रही थी। दो दिनों से उसने कुछ भी नहीं खाया था। भूख के मारे उसका हाल बेहाल था। दिन भर घूमते-घूमते उसे अंगूर का एक बाग दिखाई दिया। लोमड़ी खुश हो गई। पुष्ट, पके और रसभरे अंगूरों के गुच्छे लटके देखकर उसके मुँह में पानी भर आया। अंगूरों के गुच्छे देखने में बड़े स्वादिष्ट लग रहे थे पर थे जरा ऊँचे। अंगूर की बेल पर लोमड़ी चढ़ तो सकती नहीं थी इसलिए उसने दो कदम पीछे जाकर उछलकर उसे तोड़ना चाहा। पर तोड़ न सकी। उसने फिर से प्रयत्न किया पर असफल रही। कई बार प्रयत्न करने के बाद भी वह अंगूर तक नहीं पहुँच सकी। शाम हो गई थी और वह थक चुकी थी। हारकर वह निराश हो गई। लोमड़ी ने अपने आपको समझाते हुए कहा, "ये अंगूर देखने में तो बड़े स्वादिष्ट हैं पर खट्टे हैं" ऐसा कहते हुए वह चली गई।

***शिक्षा:*** *वस्तु को पाने में असफल होने पर उसे बुरा कहना सरल है।*

# लोमड़ी और सारस

एक दिन एक चतुर लोमड़ी की मुलाकात एक सारस से हुई। उसने सारस को मित्र बनाकर रात्रि में भोजन के लिए निमंत्रित किया। सारस ने लोमड़ी का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। लोमड़ी ने दो छिछली प्यालियों में सूप परोसा। पतली और लंबी चोंच होने के कारण सारस सूप नहीं पी सका। धूर्त लोमड़ी ने कहा, "सूप अच्छा नहीं है क्या?" सारस बोला, नहीं, मेरी तबियत ठीक नहीं है।" सारस भूखा ही लौट आया पर उसने लोमड़ी को पाठ पढ़ाने का निश्चय किया। एक दिन सारस ने लोमड़ी को निमंत्रित किया। इस बार सारस ने पतली गर्दन वाली सुराही में खाना परोसा। सारस ने अपनी लंबी चोंच से खाना खा लिया पर लोमड़ी कुछ भी न खा सकी। सारस ने पूछा, "कैसा है खाना? अच्छा नहीं लगा क्या?" लोमड़ी ने सारस की अनकही बात समझ ली थी। वह बोली, "मेरा पेट दुख रहा है।" यह कहकर वह चली गई।

***शिक्षा:*** *अपने साथ जैसा व्यवहार चाहते हो वैसा ही दूसरे के साथ करो।*

# मेढक और बैल

एक जंगल में एक मेढक अपने बच्चों के साथ रहता था। वह मेढक खा-पीकर खूब तगड़ा हो गया था और सदा डींग हाँकता था कि वही सबसे बड़ा है। एक दिन बच्चों ने एक बड़े से जानवर को देखा। वह एक किसान का बैल था। जंगल में देखकर उन्होंने सोचा, "यह प्राणी तो पहाड़ की तरह बड़ा है। इसके सिर पर सींग है और पीछे एक लंबी सी पूँछ है... लगता है संसार का सबसे बड़ा प्राणी है।" यह बात बच्चों ने अपने पिता से बताई। मेढक ने सोचा कि वह मुझसे बड़ा कैसे हो सकता है? उसने एक लंबी साँस खींची, स्वयं को फुलाया और पूछा, "क्या वह इतना बड़ा था?" बच्चों ने कहा, "इससे भी बड़ा।" मेढक ने पुन: एक गहरी साँस भीतर भरी, स्वयं को और फुलाया और पूछा, "इतना बड़ा?" बच्चों ने कहा, "इससे भी बड़ा।" मेढक ने और जोर से गहरी साँस भरी, स्वयं को फुलाया पर इस बार वह स्वयं ही फट गया।

***शिक्षा:*** *अपना लक्ष्य ऊँचा रखें लेकिन असंभव प्रयास न करें।*